|| अर्हम् ||

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

त्रिदिवसीय उपासक सम्मेलन का शुभारंभ

युवाचार्य महाश्रमण ने दी 12 व्रती बनने की प्रेरणा

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरग 10 फरवरी : युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक विवेचन में कहा कि जो व्यक्ति संसार में परिभ्रमण कराने वाले मोह वृक्ष को काटने में सफल हो जाता है वह अहंकार से दूरी बना लेता है। उसे कितना भी उंचा पद मिले, सम्मान किया जाये या प्रशंसा मिलने पर भी वह अहंकार नहीं करता है। मोक्ष के लिए मोह त्यागना होता है और मोह के त्यागने से व्यक्ति आत्मस्थ बन जाता है। आत्मस्थ व्यक्ति बाहर के झंझट, झगड़ों से कभी पराजित नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक बन जाता है। कामनाएं उससे दूर चल जाती है।

उन्होनें त्रिदिवसीय उपासक सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे उपासकों को संबोधित करते हुए कहा कि उपासकों को अशरीर का स्थान अपने सामने देखना चाहिए। उनका लक्ष्य हमेशा उंचा होना चाहिए और उस लक्ष्य तक पहुंचने वाले रास्ते की खोज कर उस पर गतिशील होना चाहिए। गति करने से ही मंजिल मिल सकती है। उन्होनें उपासको के प्रकृति से भद्र एवं व्यवहार कुशल बनने की जरुरत बताते हुए कहा कि गृहस्थ जीवन में भी साधना का अभ्यास चलना चाहिए। ज्ञान की बात सुनने का प्रयास होने से और निरंतर स्वाध्याय करने से भाव शुद्धि होती है। युवाचार्यप्रवर ने उपासकों एवं श्रावक समाज को 12 व्रती बनने की प्रेरणा देते हुए कहा कि उपासक अपने सारे कार्यों को छोड़कर सेवा भावना के साथ समय का विसर्जन करते हैं, यह बहुत बड़ी बात है।

पीछले सात दिनों से चल रहे उपासक प्रशिक्षण शिविर में काम लेने वाले 29 नये उपासकों ने उपासक श्रेणी में सम्मिलित होने के लिए परीक्षा दी। प्रशिक्षण सत्रों में मुनि दिनेश कुमार ने जैन दर्शन के दान, दया, अनुकम्पा तथा मिध्यात्वी की क्रिया जैसे गूढ़ विषयों पर सरलीकरण के साथ प्रकाश डाला । उन्होने ज्ञान दान, संयतीदान एवं अभय दान को श्रेष्ठ दानों में बताया। मुनि राजकरण ने 12 व्रतों को विस्तार से समझाया । मुनिश्री ने उपासकों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

पूर्वजन्म अनुभूति शिविर 5 मार्च से

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से पूनर्जन्म अनुभूति शिविर का आयोजन 5 मार्च से 9 मार्च तक किया जायेगा। मुनि किशनलाल के निर्देशन में आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के द्वारा आयोजित इस शिविर में अपने पूर्व जन्म के रहस्यों को जान सकेंगे। आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में होने वाले इस शिविर में जीवन क्या है ? जीवन की समस्याओं के समाधान में अतीत का क्या योगदान है, जीवन को कैसे रुपांतरीत किया जाता है ? आदि जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त होगा। इस शिविर में भाग लेने के लिए 09950039313, 09414416340 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक